Krishna Nand B.A I Hons (1)

प्रश्न - स्वप्न की परिभाषा तथा स्वप्न कार्यों का उल्लेख करें।

Ans → स्वप्न सामान्य जीवन की एक आम घटना है। सभी मनुष्य स्वप्न देखते हैं। कुछ स्वप्न सुखद और प्रिय होते हैं, तो कुछ स्वप्न दुखद, भयावह और अप्रिय स्वरूप के होते हैं। साथ ही प्रायः सभी लोग स्वप्नों के अर्थों को जानने की उत्सुकता रखते हैं। मनोवैज्ञानिकों ने स्वप्न को लगातार होनेवाली मानसिक क्रियाओं की अवस्था विशेष माना है, जो नींद की अवस्था में होती है तथा इसका स्व... विभ्रामक होता है।

स्वप्न के स्वरूप को संक्षेप में स्पष्ट करने हेतु प्राचीन दार्शनिकों, शरीरशास्त्रीयों एवं आधुनिक मनोवैज्ञानिकों ने अप... अपने ढंग से इसे परिभाषित करने की कोशिश की है। प्राचीन दार्शनिकों के अनुसार सुप्तावस्था में व्यक्ति की आत्मा इधर-उ... घूमती है और इस क्रम में वह व्यक्ति जो कुछ भी अनुभव क... है वही स्वप्न है। हिपोक्रेटस (Hipprocrates) ल्युक्रियस (Lucret... अरस्तु (Aristotle) इत्यादि प्राचीन दर्शनशास्त्रियों ने स्वप्न... आत्मा की अलौकिक शक्ति का परिणाम कहा है और उसके विचि... या अनोखे कार्यों की अनुभूति को स्वप्न की संज्ञा दी है।

Krishna Nand B.A I Hons ②

शरीरशास्त्रियों (Physiologists) के अनुसार स्वप्न शारीरिक उत्तेजनाओं की अभिव्यक्ति है। और नींद की अवस्था में बाहरी उत्तेजनाओं से उत्पन्न स्नायु प्रवाह के कारण होता है। नींद की अवस्था में चूँकि मस्तिष्क का उच्च केन्द्र भी सुषुप्त रहता है, इसलिए इनके वास्तविक स्वरूप को समझने में कठिनाई होती है।

लेकिन मनोवैज्ञानिकों ने स्वप्न को मानसिक प्रक्रिया कहा है। इनके अनुसार मानसिक क्रियाएँ लगातार चलती रहती हैं और स्वप्न इन्हीं लगातार चलनेवाली मानसिक प्रक्रियाओं की एक विशिष्ट अवस्था है। किशर ने इसकी परिभाषा देते हुए कहा है "सुषुप्तावस्था में मानसिक क्रियाएँ लगातार चलती रहती हैं और स्वप्न इन्हीं लगातार होनेवाली क्रियाओं की केवल एक अवस्था होती है।" ब्राउन (Brown) के अनुसार "स्वप्न विभ्रम होते हैं, जिनका अनुभव सबको प्रतिरात्रि होता है और जब हम जगते हैं तब उसका विभ्रामक स्वरूप बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है।"

अतः संक्षेप में कहा जा सकता है कि "स्वप्न-निद्रावस्था की मानसिक प्रक्रिया का प्रतिफल है।"

स्वप्न कार्य (Dream Work) स्वप्न के आधारभूत गुप्त या अव्यक्त विषय प्रायः कामुक स्वरूप के होते हैं, जो चेतन प्रतिबंधकों के प्रतिरोध के कारण सहज रूप में व्यक्त नहीं हो पाते। अतः ये गुप्त विषय वेश बदलकर प्रकट होते हैं। अर्थात स्वप्न के गुप्त विषय के वास्तविक रूप अवास्तविक रूप में परिणत होकर व्यक्त होते हैं। गुप्त विषय के अवास्तविक या छद्म रूप में परिवर्तित होने की क्रिया को ही स्वप्न-कार्य की संज्ञा दी जाती है। ब्राउन ने स्वप्न-कार्य की परिभाषा इस प्रकार दी है "फ्रॉयड के अनुसार स्वप्न कार्य स्वप्न के उस तंत्र को कहते हैं, जिसके द्वारा स्वप्न के अव्यक्त विषय स्वप्न के व्यक्त विषय के रूप में परिवर्तित होते हैं।" इस परिभाषा से यह स्पष्ट होता है कि स्वप्न कार्य द्वारा स्वप्न के अव्यक्त विषय व्यक्त विषय के रूप में रूपांतरित होते हैं तथा इस कार्य में स्वप्न के कुछ तंत्र या रचनाएँ सहयोग ...